



# भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण  
EXTRAORDINARY

भाग १—खण्ड १  
PART I—Section 1

प्राधिकार से प्रकाशित  
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. २०९] नई दिल्ली, शुक्रवार, सितम्बर १९, १९८६/भाद्र २८, १९०८  
No. 209] NEW DELHI, FRIDAY, SEPT. 19, 1986/BHADRA 28, 1908

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में  
रखा जा सके

Separate Paging is given to this Part in order that it may be filed as a  
a separate compilation

चित्त मंत्रालय  
(राजस्व विभाग)

नई दिल्ली, १९ सितम्बर, १९८६

सं. प्रतिअवायगी/सा.सू. ३१/८६

मुद्रित

फा.सं. ६००/५००३-०४/८६-प्रतिअवायगी, —दिनांक ३१ मई, १९८६ के भारत के  
राजपत्र (असाधारण) के भाग १, खण्ड (१) में प्रकाशित दिनांक ३१ मई, १९८६ को सार्वजनिक

सूचना सं. प्रा.व.सा.सू. 11/86 में, केन्द्रीय सरकार एतद्वारा निम्नलिखित संशोधन करती है :—

“उपक्रमांक	निम्नलिखित के स्थान पर	निम्नलिखित पढ़ें
2506	माल के विवरण वाले कागज के नीचे “56”	“55”
4813(ख)	प्रतिशतावली की दर वाले कागज के नीचे “15.70 रु. (केवल पन्द्रह रुपये, पचास पैसे) प्रति एक सौ लब्ध।”	“13.00 रु. (केवल तेरह रुपये) प्रति सौ लब्ध।”
5592(ब)	प्रतिशतावली की दर वाले कागज के नीचे “61.80 रु. (केवल इकसठ रुपये पचास पैसे) प्रति सौ रिकार्ड।”	“61.50 रु. (केवल इकसठ रुपये पचास पैसे) प्रति सौ रिकार्ड।”

एस के. राज, डी. सचिव

MINISTRY OF FINANCE  
(Department of Revenue)

New Delhi, the 19th September, 1986

No. DRAWBACK/PN-31/86

CORRIGENDUM

F.No. 600/500)-04/86-DBK.—In the Public Notice No. DRAWBACK PN-11/86 dated the 31st May, 1986, published in Part I, Section (1) of the Gazette of India (Extra-ordinary), dated the 31st May, '86, the Central Government hereby make the following corrections therein, namely:—

“Sub Sl No.	For	Read
2605	“56” occurring under column for descrip- tion of goods	“55”
4813(b)	“Rs. 15.70 (Rupees fifteen and paise seventy only) per one hundred piece..” Under column rate of drawback.	“Rs. 13.00 (Rupees thirteen only) per hundred pieces.”
5592(a)	“Rs. 61.80 (Rupees sixty one and paise eighty only) per hundred records.” Under column for rate of drawback.	“Rs. 61.50 (Rupees sixty one and paise fifty only) per hundred records”

S.K. ROY, Dy. Secy.